पूसा बासमती 1121 और गेहूं एच डी 2967 ने स्थापित किए सफलता के नए कीर्तिमान

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने के लिए मिशन मोड में काम कर रहा है। विज्ञान आधारित कृषि से कृषि का स्वरूप बदला है और देश खाद्यान्नों का उत्पादन बनाए रखने में कामयाब हो पाया है।

- चावल में पूसा बासमती 1121 और गेंहू में एच डी 2967 के उत्पादन से व्यापार में देश और विदेश दोनों में काफी फर्क पड़ा है।

- इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईएआरआई), पूसा द्वारा विकसित पूसा बासमती 1121 के निर्यात से वर्ष 2014 से 2017 के दौरान देश को 71900 करोड़ रुपये के बराबर विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई जो वर्ष 2011-14 (62800 करोड़ रु.) की तुलना में 9,100 करोड़ रुपये अधिक है।

- गेहूं की मुख्य किस्म एच डी 2967 की खेती वर्तमान में पूरे देश में 10 मिलियन हेक्टेयर से भी अधिक क्षेत्र में की जा रही है। इसका औसत उत्पादन 5.50 टन प्रति हेक्टेयर है।

- इस के अलावा परिषद ने 12 बायोफोर्टीफाइड फसल तैयार किया है जो देश में कुपोषण रोकने में मदद करेगा। फसलों एबों बागवानी की उत्पादकता, उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ाने के क्रम में फसलों की 209 किस्में विकसित की गई है।